कथा सरिता

शुकदेव ने पाया जनक से आत्मज्ञान

मुनि शुकदेव महाभारत के रचयिता वेदव्यास के पुत्र थे। परम ज्ञानी होने के बावजूद उन्हें स्वयं में कोई अभाव निरंतर महसूस होता था। उन्होंने अपने पिता को यह बात बताई। वेदव्यास, पुत्र को व्यवहारिक धरातल पर इस समस्या से मुक्त कराना चाहते थे। इसलिए उन्होंने शुकदेव को मिथिला नरेश जनक के पास जाने के लिए कहा। शुकदेव मिथिला पहुँचे तो शानदार अट्टालिकाएं, भव्य राजमहल, आभूषणों से सज्जित महिलाएं व हरे-भरे उपवनों से सज्जित मिथिला का वैभव देखकर भी वे इनके प्रति आकर्षित नहीं हुए। महल के द्वार पर द्वारपालों ने उन्हें कड़ी धूप में देर तक खड़ा रखा किंतु वे ज़रा भी रुष्ट नहीं हुए, न उन्हें कष्ट हुआ। महल के भीतर प्रवेश मिला तो उन्हें एक उपवन में ले जाया गया। वहां मनोहारी नृत्य चल रहा था, किन्तु शुकदेव निरासक्त बैठे रहे। फिर छप्पन प्रकार के व्यंजनों का भोजन कराया गया किन्तु उन्होंने कोई प्रशंसा नहीं की। रात्रि में सोने के लिए उन्हें आरामदायक पलंग दिया गया, किंतु वे तटस्थ भाव से सो गए। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ध्यान करने लगे। महल के वैभव में शुकदेव जल में कमलवत रहे। अगले दिन उन्हें राजा जनक से मिलवाया गया। उनसे प्रभावित जनक ने शुकदेव को चरण स्पर्श कर ऊँचे आसन पर बैठाया और स्वयं उनके समक्ष धरती पर बैठे और बोले, 'मुनिवर ! आप मोह-माया से सर्वथा मुक्त हैं और परम-ज्ञानी हैं, लेकिन आपको अपने इस ज्ञान का भान नहीं है। इसी कारण आप अपने भीतर अभाव देखते हैं।' इतना सुनते ही शुकदेव को आत्मज्ञान हो गया। अपनी निर्लिप्तता का एहसास हो जाना ही परम सुख व शांति की उपलब्धि है। यही सच्चा संतत्व है और मनुष्य की श्रेष्ठता का अंतिम बिंदु है।

शिव-कृपा से संवरा चोर का जीवन

एक चोर जब भी चोरी करता, उसका एक हिस्सा गरीबों पर अवश्य खर्च करता। ऐसा करते हुए वह ईश्वर से अपने बुरे कामों की माफी भी मांगता था, किंतु परिजनों के लाख समझाने के बावजूद चोरी करना नहीं छोड़ता। एक रात वो जहां-जहां चोरी करने गया, उसे कोई न कोई जागता हुआ मिला। उसने मन में सोचा कि जो भगवान सभी की रोजी-रोटी की व्यवस्था करता है, क्या वह आज मुझे खाली हाथ और भूखे-पेट रखना चाहता है? एक-दो स्थानों पर उसने और कोशिश की, किंतु सफलता हाथ नहीं लगी। अब वह बुरी तरह थक चुका था। अत: सामने स्थित शिव मन्दिर में जाकर लेट गया। लेटे-लेटे वह सोचने लगा कि दो घंटे विश्राम कर लूं, फिर एक बार और प्रयास करूंगा। शायद कहीं सफलता मिल जाए। सोचते-सोचते अचानक उसकी दृष्टि मन्दिर में लटके पीतल के एक बड़े घंटे पर गई। वह प्रसन्न हुआ कि भगवान ने मेरे लिए कितनी अच्छी व्यवस्था कर दी। उसने सोचा कि आसपास सीढ़ी तो है नहीं, इसलिए इतने बड़े घंटे को शिवलिंग पर चढ़कर निकाल लेना चाहिए। उसने शिवलिंग पर चढ़कर घंटा उतार लिया। तभी भगवान शिव प्रकट होकर उससे बोले - 'भक्त! आज तू वर मांग। मैं तेरी हर इच्छा पूर्ण करूंगा। चोर घबरा गया। उसने अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। तब भगवान बोले - 'लोग मुझ पर बेल पत्र चढ़ाकर मुक्ति द्वार खोजते हैं और तू तो स्वयं ही मुझ पर चढ़ गया। फिर तू गरीबों का मददगार भी है। आज से तू यह काम छोड़कर व्यापार कर। तुझे अवश्य ही सफलता मिलेगी।' चोर ने उसी दिन से चोरी छोड़ सद्मार्ग अपना लिया। सार यह है कि ईश्वर की कृपा से प्रतिकूलताएं अनुकूलताओं में बदल जाती हैं। अत: उस पर भरोसा रखकर धर्म की राह पर चलना चाहिए।

भीतर से ही आती है वास्तविक शांति

एक अत्यंत वीर व साहसी युवक किसी राज्य की सेना में भर्ती हुआ। उसकी वीरता राजा ने अनेक लड़ाइयों में देखी। वह जहां होता, वहां विजय सुनिश्चित हो जाती थी। राजा उससे बहुत प्रसन्न था। राज्य के वार्षिकोत्सव के अवसर पर राजा ने युवक को राज्य का सबसे बड़ा सम्मान देने की घोषणा की। राजा ने सोचा कि युवक यह सुनकर खुश होगा। किंतु राजा को पता चला कि युवक खुश नहीं है।

राजा ने उसे बुलवाकर पूछा, 'युवक! तुम्हें क्या चाहिए? तुम जो चाहो, मैं दूंगा।' तब युवक बोला, 'महाराज'! आप मुझे क्षमा करें। मुझे पुरस्कार, सम्मान, पद या पैसा नहीं चाहिए। मैं तो केवल मन की शांति चाहता हूं।' यह सुनकर असमंजस में पड़े राजा ने कहा, 'तुम जो चीज़ मांग रहे हो, वह मेरे पास भी नहीं है। फिर तुम्हें कैसे दूं।' फिर कुछ देर विचार कर राजा ने कहा, 'मैं एक ज्ञानी साधु को जानता हूं। शायद वे तुम्हें मन की शांति दे सकेंगे।' राजा युवक को लेकर साधु के पास गया। साधु अपने आश्रम में ध्यानरत थे। उनके चेहरे की आभा बता रही थी कि वे भीतर से शांत व संतुष्ट हैं। जब उन्होंने आंखें खोली तो राजा ने युवक की मांग के विषय में उन्हें बताया।

तब साधु ने युवक को समझाया, 'शांति ऐसी संपत्ति नहीं है, जिसे कोई ले अथवा दे सके। उसे तो स्वयं ही पाना होता है, क्योंकि यह भौतिक नहीं, मानसिक वस्तु है, जिसे अपनी निजता में ही हासिल करना होता है। उसे कोई छीन भी नहीं सकता।' साधु की बातों से युवक की अंतर्दृष्टि खुल गई। वस्तुत: मन की शांति विकारमुक्त हृदय में संभव है और ऐसा स्वयं की इच्छाशक्ति से ही संभव होता है। अत: शांति बाहर से नहीं पाई जा सकती, वह भीतर से आती है।

सत्य ने किया बालक को भयमुक्त

गांव में रहने वाले एक बुजुर्ग ने एक अनाथ बालक को अपने पास रख लिया था। दोनों एक-दूसरे का सहारा बन गए थे। बालक, बुजुर्ग को 'बाबा' कहता और उनका कहना मानता। बालक को बस्ती से बाहर नदी किनारे बहुत अच्छा लगता। वह जब-तब वहां पहुंचकर घंटों खेलता रहता, पर लौटकर आता तो बाबा की डांट खाता।

बाबा को डर लगता कि कहीं वह नदी में गिर न जाए इसलिए एक दिन उन्होंने बालक से कहा, 'बेटा! तुम नदी किनारे अकेले मत जाया करो, वहां भूत रहता है।' यह सुनकर बालक इतना भयभीत हो गया कि उसने घर से निकलना ही बंद कर दिया। बाबा ने यह नहीं सोचा था कि बालक भूत की झूठी बात से इतना डर जाएगा। आखिर एक दिन उन्होंने बालक के डर को दूर करने के लिए उसके हाथ में एक धागा बांधते हुए कहा, 'बेटा! ये भगवान का धागा है। अब वे तुम्हारे साथ हैं, तुम्हें भूत से डरने की कोई जरूरत नहीं है।' इसके बाद बालक का डर दूर हो गया और निर्भीक होकर बाहर घूमने-फिरने लगा। एक दिन उसके हाथ का धागा कहीं गिर गया। वह सूनी कलाई लेकर बाबा के पास आया और बोला, 'बाबा! भगवान चले गए अब भूत आ जाएगा।' उसे डरा हुआ देखकर बाबा को अपनी गलती महसूस हुई। उन्होंने उसे समझाया, 'बेटा! न तो नदी किनारे भूत है और न धागे में भगवान। तुम्हारी चिंता के वशीभूत होकर मैंने यह झूठ बोला। तुम सावधानी से मेरे साथ नदी चला करो। इससे मेरी चिंता और तुम्हारा भय, दोनों दूर हो जाएंगे।' यह सुनकर बालक भयमुक्त हो गया। बच्चों का मन सहज विश्वासी होता है, इसलिए उन्हें कभी असत्य व भ्रामक बातें न कहें। सदैव सत्य व साहस की शिक्षा दें।

शांत रखें मन...

पेज 11 का शेष

- कोई भी समस्या अधिक समय तक नहीं रहती। एक-न-एक दिन उसका अंत अवश्य होना ही है। ऐसे-ऐसे शक्तिशाली संकल्प करके स्वयं को समस्याओं से निबटने के लिए हमेशा तैयार रखें।

समस्या को अपना परीक्षक मानें - समस्याओं को कभी पहाड़ नहीं समझना चाहिए। जब भी कोई समस्या आए तो सोचें कि यह हमारी परीक्षा का समय है और हमें विजयी होना है।

आत्म शक्तियों को बढ़ायें - कई व्यक्ति अपनी शक्तियों को सीमित समझते हैं और यह मानते हैं कि उनके पास परिस्थितियों से बाहर आने का कोई रास्ता नहीं है। ऐसे कमज़ोर संकल्प ही परिस्थितियों का सामना करने नहीं देते। उस समय स्वमान धारण कर लें कि 'मैं विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ'। मेरे सामने कोई भी परिस्थिति टिक नहीं सकती। जो परिस्थिति आज मेरे समक्ष आई है, उससे निबटने की शक्ति भी अवश्य मेरे पास है। विजय मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसका मुकाबला अवश्य करुंगा। ऐसे शक्तिशाली विचार मन में लाने से ही हम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

इन सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद परिस्थिति को नाप-तोल कर उसका विशलेषण करें, उसकी पूरी गहराई में जायें और ठंडे दिमाग के साथ उसका सामना करें। तभी हम अपनी आन्तरिक शक्तियों का विकास कर सकेंगे और समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकेंगे।

गया। पूर्व नगर विकास एवं आवास मंत्री डॉ. प्रेम कुमार, चैम्बर ऑफ कॉमर्स के पूर्व अध्यक्ष कौशलेन्द्र प्रताप, महापौर विभा देवी एवं ब्र.कु.शीला चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करते हुए।

फरीदाबाद। आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए स्वामी कौशल मुनि (योगधाम), ब्र.कु.कौशल्या तथा अन्य।

दमन। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा ग्रुप लीडर ब्र.कु.रोहित को मोमेन्टो से सम्मानित करते हुए इंडस्ट्रीयलिस्ट गफूर भाई। साथ हैं ब्र.कु.रंजन, ब्र.कु.अशोक, ब्र.कु.भावेश, ब्र.कु.प्रीति, ब्र.कु.संगीता तथा अन्य।

भवानी नगर-राज.। नौ देवियों की चैतन्य झांकी के आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित उद्योगपति भंवरलाल एवं ब्रह्माकुमारी बहनें।

भाखड़ा नांगल डैम। बांध के चीफ इन्जीनियर (विद्युत) के.के. कौल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पुष्पा, ब्र.कु.मोनिका।

पंढ़रपुर-महा.। ब्रह्माकुमारी संस्था के धार्मिक प्रभाग के "एक ईश्वर एक विश्व परिवार" कार्यक्रम में स्वागत भाषण करते हुए ब्र.कु.महानंदा। साथ हैं ब्र.कु.शशि, ब्र.कु.कविता, ब्र.कु.सोमप्रभा, ब्र.कु.नारायण एवं ब्र.कु.बबन।